शोध प्रबंध का प्रारूप

उत्तराखण्ड में स्वास्थ्य पर्यटन के स्वरूप का समीक्षात्मक अध्ययन–ऋषिकेश के विशेष सन्दर्भ में

पर्यटन प्रबन्धन में पी–एच. डी. की उपाधि

हेतु प्रस्तुत

द्वारा

अरूणेश पाराशर

निर्देशक

डॉ. सुनील काबिया

एसोसिएट प्रोफेसर

पर्यटन एवं होटल प्रबंधन संस्थान

बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय

झाँसी

शोध उपाधि समिति

देव संस्कृति विश्वविद्यालय

शांतिकुंज, हरिद्वार

को प्रस्तुत

प्रस्तावना (Introduction) :

प्रकृति के गर्भ में छिपा है स्वास्थ्य का राज। मनुष्य जब तक प्राकृतिक ढ़ंग से रहता है तब तक उसका तन-मन दोनों में कोई विकृति उत्पन्न नहीं होती। भारतीय मनीषी निरोग को महत्व देकर उसे सबसे बड़े सुख की संज्ञा से अभिहित करके शरीर को महत्व देते हैं। शरीर एवं मन दोनों स्वस्थ रहें, इसके लिए खानपान, रहन-सहन का विधान बना है। जिसका पालन करके जीवन आज भी निरोग रहकर पूर्णता को प्राप्त कर सकता है। निरोग जीवन मनुष्य की स्वाभाविक प्रकृति है मनुष्य के लिए ऋषियों का संदेश है - **''जीवेम् शरदः शतम्''** - व्यक्ति सौ वर्ष तक सुखपूर्वक जिए।[1] प्राचीन समय में मानव प्रकृति के सन्निकट, प्रकृति की गोद में रहकर प्रकृति के अजस्त्र अनुदान का लाभ लेता था।

रोगो की उत्पत्ति की जड़ हमारी जीवनशैली का त्रुटिपूर्ण होना है। **आचार्य श्री राम शर्मा जी का कहना है** कि प्रगतिशील सभ्यता की दौड़ में अग्रणी मानव को पीछे की ओर लौटना होगा- प्रकृति के नियमों का पालन करना सीखना होगा।[2] **जर्मनी के प्रसिद्ध विद्वान हनीमैन** ने स्वस्थ जीव के जो लक्षण बताए हैं, वे काफी महत्वपूर्ण हैं। इनके अनुसार व्यक्ति अपने मस्तिष्क का सदुपयोग प्रकृति की निरंतर प्रगति के लिए कर रहा है तो वह स्वस्थ है यानि की शरीर और मन में कोई विकृति नहीं हैं।[3] भारतीय मुनष्य ने प्रकृति से तदाम्य स्थापित किया था, इस कारण उनका शरीर एवं मन संतुलित रहता था। योग उत्तम साधन था, मन को एकाग्रचित करने का।

प्राकृतिक ढंग से रहन-सहन, मानव को स्वस्थ दीर्घजीवी और चिरयुवा बनाने में सक्षम है। भारत के प्राचीन ऋषि, मुनि, तपस्वी विधा अध्ययन के केन्द्रों या आयामों मे प्रकृति की गोद में होते थे और उसके रहस्यो को जानने-समझने में अनवरत जुटे रहते थे। वे एक-एक करके प्रकृति के रहस्य का पर्दा उठाते गये और परम सुख में विचरते रहे। दिल्ली के एक हेल्थ सेन्टर **'नंदवनम्'** के **डा. जीवन एंटनी के अनुसार** हर रोग का नेमिसाल निदान उपलब्ध करती है **'प्रकृति'** बस हमें उसके अनुरूप चलना होगा। पंचकर्मा के बारे में बताते हुए वे कहते हैं कि -

---

1 ऋग्वेद ।
2 योगएवं प्राकृतिक चिकित्सा (ब्रह्मवर्चस) के प्राकथन से ।
3 दैनिक भास्कर 05

यह आयुर्वेदिक चिकित्सा की ऐसी पदति है जिसके माध्यम से बीमारी का स्थायी रूप से इलाज किया जा सकता है।[4]

अब सम्पूर्ण विश्व प्रकृति की ओर वापस मुड़ने लगा है। विशेषकर पश्चिमी देश जो चरम भौतिकता पर हैं वे प्रकृति की ओर लौट रहे हैं । **W.H.O. की रिपोर्ट के अनुसार** प्राकृतिक यात्राओं में 20 प्रतिशत की वृद्धि हो रही है जो पूरे पर्यटन उद्योग के औसत वृद्धि से 5 गुना अधिक है।[5] इस तरह यह स्पष्ट ही है कि एक प्रकृतिगत वातावरण ही प्राकृतिक स्वास्थ्य के लिए यात्रा करने की प्रेरक शक्ति बनता है।

स्वास्थ्य मनुष्य की अमूल्य निधि है इसी पर मनुष्य की प्रसन्नता, खुशहाली, समद्धि एवं क्रियाकलाप निर्भर है। आयुर्वेद के अनुसार कफ, वायु तथा पित्त की समरूपता स्वस्थता है। किसी एक के वृदि–हास होने से चित्त, विक्षेप, अशान्ति, मानसिक, शारीरिक असन्तुलन उपद्रव होने लगता है।[6] मानव जीवन के सकारात्मक प्रगति का आधार स्वास्थ्य ही है स्वास्थ्य को समझते हुए **W.H.O.** अपनी परिभाषा मे बताता है कि **"Health is defined as the state of Physical, Mental, Social and Spiritual well being of a person"** [7] इस प्रकार स्वास्थ्य अब अपने अन्दर सभी आयामों को समाहित करने लगा है। स्वास्थ्य कोई रचनात्मक क्रिया नहीं है बल्कि यह लोगो को प्रोत्साहित करता है, तथा पुर्नस्थापित करता है। इस तरह से स्वास्थ्य शरीर और मन की लोचदार दशा है, जिसमें व्यक्ति मानसिक शारीरिक, आध्यात्मिक क्षमताओं का उत्तरोतर विकास करता जाता है।

'पर्यटन' शब्द के अन्दर वे समस्त व्यापारिक क्रियाएं सम्मिलत हैं जो कि यात्रियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। किसी भी यात्रा का पर्यटन से सम्बन्ध स्थापित हो जाता है अगर वह निम्न शर्तों को पूरी करता हो :–

- यात्रा अस्थाई हो
- यात्रा ऐच्छित हो

---

4. अमर उजाला (कैरियर) 7 दिस . 05
5. Sampat kumar swami, the geate portal tourism journal V.2 page-31

6 आयुर्वेद विकास, दिसम्बर 03
7 W.H.O. 1954

– यात्रा का अर्थ किसी प्रकार का पारिश्रमिक अर्जित करना नही होना चाहिए।[8]

आजकल पर्यटन को **घटना एवं प्रक्रिया** का सम्मिलित रूप बताया जाता है। उदाहरण के लिए जब व्यक्ति के मन में यात्रा का विचार आया तो यह घटना होगी और जब वो इस यात्रा को पूरा करने के लिए नीति निर्धारित करेगा तो यह क्रिया प्रक्रिया कहलाएगी। अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन यात्री के लिए पारपत्र सिद्ध होती है वहीं घरेलू पर्यटन राष्ट्रीय एकता में सहायक सिद्ध होती है। **लोलनी प्लेनैट के सर्वेक्षण** में कहा गया है कि भारत और चीन क्रमशः 9.7 प्रतिशत और 8.5 प्रतिशत विकास सहित 2012 तक दूसरे ओर तीसरे विशालतम बाजार हो जाएंगे।[9] भारत में स्वास्थ्य पर्यटन में वृद्धि करके इस आकड़े में और भी वृद्धि की जा सकती है। भारत में 1 करोड 65 लाख लोग पर्यटन से अप्रत्यक्ष लाभ पाते हैं।[10] **W.T.O. के अनुसार** दुनिया भर में प्रत्येक 10 नौकरी पेशा लोगो में एक पर्यटन उद्योग से रोजीरोटी कमा रहा है।[11]

विश्व पर्यटन एवं यात्रा परिषद (W.T.T.C) के एक अध्ययन के अनुसार भारत की अर्थव्यवस्था **में पर्यटन एवं यात्रा** से वर्ष 2002 में 1400 अरब रुपये की आर्थिक गतिविधि हुई जो 2012 तक 6500 अरब डालर हो जाने की संभावना है, चूंकि पर्यटन एक उद्योग है, इसलिए पर्यटन के विभिन्न आयामों में प्राकृतिक स्वास्थ्य पर्यटन को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचारित करके स्वस्थता उपलब्ध कराने के साथ–साथ विदेशी मुद्रा का भी अर्जन किया जा सकता है । पूरे विश्व में स्वास्थ्य के लिए यात्रा करने वाले का बाजार 40 बिलियन डॉलर है और यह 20% साल की दर से वृद्धि कर रहा है ।[12]

आजकल लोग कई उद्देश्यों को लेकर यात्रा करते हैं जैसे– बिजनेस, मीटिंग, सांस्कृतिक सम्बन्धों को बढ़ाने के लिए, पारिस्थतिकी खोज के लिए, परिवार से मिलने एवं मित्रों के साथ घूमने के लिए ।

---

8 दीक्षित एवं गुप्ता, 2003, पेज – 21
9 प्रतियोगिता दर्पण, 05 पेज–699
10 क्रॉनिकल, नवम्बर 04पेज– 95
11 वही
12 Business world dec. 22 -03

लेकिन सबसे अधिक प्राचीन व सीधा कारण **स्वास्थ्य के लिए ही यात्रा** करना है।[13] **यात्रा की प्रेरणा** में शारीरिक प्रेरणा एवं आराम से सम्बन्धित शारीरिक स्वास्थ्य के लिए यात्रा की जाती है[14] । 1963 के **यूनाईटेड नेशन कान्फ्रेन्स** जो कि यात्रा एवं पर्यटन पर आधारित थी उसमें पर्यटन को अन्य पक्षों से जोड़ते हुए कहा गया है कि – **स्वास्थ्य यात्रा का एक मुख्य कारक है** ।[15]

प्राचीन काल में धार्मिक प्रेरणाओं से लोग यात्रा करते थे । आज भी लोग धार्मिक भावना के साथ–साथ मानसिक या शारीरिक सुख की तलाश में या फिर आनन्द की खोज में यात्रा करते हैं। । **धर्म और स्वास्थ्य** ने स्मरणातीत काल से ही ऐसी यात्राओं को प्रेरित किया है ।[16]प्राचीन काल से ही अरबी व्यापारी और चीनी लोग इलाज करवाने भारत आते रहे हैं।[17]

स्वास्थ्य पर्यटन भारत में विकसित होता हुआ एक नया पयर्टन उत्पाद है जो वर्तमान में काफी लोकप्रिय हो रहा है । इस पर्यटन के अन्तर्गत पर्यटक अपने समग्र स्वास्थ्य पर ध्यान देता है एवं प्राकृतिक विधियों द्वारा वह उन साधनों को अपनाता है जिससे वह लम्बे समय तक दीर्घायु हो एवं उसकी जीवनशैली उच्चयत की ओर बढ़े।

स्वास्थ्य पर्यटन की कोई एक सटीक परिभाषा नहीं है, इसे कई रूपो में देखा जाता है । परन्तु स्वास्थ्य पर्यटन के अन्तर्गत स्वस्थ रहने की प्राकृतिक विधियों को ही ज्यादा महत्व दिया जाता है । **IUOTO** ने स्वास्थ्य पर्यटन की परिभाषा देते हुए कहा है कि – **"Health Tourism is the Provision or health facilities utilzing natural resource of the Country , In particular , Mineral, Water and climate .**[18]

---

13 G-A-O, Alleny-Health and touristm in the carivvean : Bulletin of the pan American Health Org-page. 291-300

14 A. K. Bhatia Tourism Dovelopment p. 49
15 U. N. Confrence on International Travel and Tourism

16 दीक्षित एवं राय, भारत के प्रमुख पर्यटन उत्पाद पेज 291
17 वही
18 IOUTO, 1973 Health tourism United Nation Geneva

अमेरिका के स्वास्थ्य प्रबन्धन के टीचर **टबैची के अनुसार** – " **Health tourism is "Any kind or travel to make yourself or a member or your family healthier "** [19]

स्वास्थ्य पर्यटन की अवधारणा का विकास 17वीं एवं 18 वीं शताब्दी से मिलता है। कुछ विशेष स्थानों पर स्पा के विकास का कारण खनिज युक्त पानी में दवाई के गुण का विद्यमान होना था।[20]

यात्री कष्टों और कई बीमारियों से स्थाई मुक्ति की खोज में कई स्थानों में जाते हैं । उदाहरण के स्वरूप **"Bath in England"** जैसे कई स्थानों और हिमालय एवं स्विटजरलैण्ड के प्राकृतिक स्वास्थ्यवर्धक जल स्त्रोतों के स्थानों पर लोग स्नान के लिए भीड़ लगा देते थे। यह समृद्ध परम्परा और विरासत सदैव उस जिज्ञासु के लिए मददगार रही है । जो मस्तिष्क और शरीर के मध्य समन्वय की खोज में है।

स्वास्थ्य पर्यटन में तीव्रता से वृद्धि हो रही है इसका कारण यह है कि एक समृद्ध जनसंख्या दृढ़ निश्चयी है – तनाव से बचने एवं देखभाल व प्रसन्नता के लिए प्रकृति की ओर मुड़ने के लिए। पर्यटन धीरे–धीरे विकास कर रहा है , यह महत्वपूर्ण Input है अर्थव्यवस्था का अमरीका तथा अन्य देशों में इसलिए पर्यटन से सम्बन्धित उपेक्षाओं – आधारभूत सुविधाओं, सुरक्षा और स्वास्थ्य तथा वातावरण संरक्षण पर इसे केन्द्रित किया गया है।

भारत स्वास्स्य पर्यटन में तेजी से विस्तार कर रहा है **स्वास्थ्य पर्यटन की मैकेजी रिपोर्ट के अनुसार भारत में स्वास्थ्य पर्यटन की काफी सम्भावनाएँ हैं** यहाँ पर देह चिकित्सा, आयुर्वेदिक चिकित्सा इत्यादि इंग्लैण्ड और अमेरिका की तुलना में काफी सस्ता है भारत का स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवा बाजार वर्तमान .10 .30 अरब रूपये से बढ़कर 2012 तक 3200 अरब रूपये तक पहुँच सकता है ।[21] पर्यटकों के संबंध में मैकेजी रिपोर्टके अनुसार 2004 में 1. 5 लाख पर्यटक स्वास्थ्य पर्यटन के अंतर्गत आए जो 2010 –12 दस लाख पर्यटक संख्या में बदल जाने की संभावना है ।[22]

---

19 H.S. M. I. Marketing Review 2001
20 IGNU, TS-2 ka4
21 कॉनिकल जून 04
22 अहा जिंदगी नव . 05

भारत में योग, आयुर्वेद, नेचुरपैथी, परम्परागत उपचार स्वास्थ्य पर्यटन को बढ़ा रहे हैं जाने माने प्राकृतिक चिकित्सक सचिदानन्द कहते हैं कि प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग में अवसाद जन्य स्थितियों से उभरने की बेहतर संभावनाएँ हैं।[23] **W.H.O की रिपोर्ट के अनुसार** विश्व की 80 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या अपनी प्राथमिक चिकित्सा के लिए पौधों पर आधारित चिकित्सा पद्धति पर आधारित है ।[24] एवं यह स्पष्ट ही है कि प्राकृतिक स्वास्थ्य संरक्षण में औषध सेवन का महत्वपूर्ण स्थान है। **डॉ . एपीजे अब्दुल कलाम** चिकित्सा एवं स्वास्थ्य पर्यटन को बढ़ावा देने के पक्ष में है, उनका मानना है कि भारत की आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति योग और विज्ञान का तालमेल लोगो के जीवन में आनन्द भर सकता है।[25] अब सम्पूर्ण विश्व प्रकृति की ओर वापस मुड़ने लगा है । लोग राहत और निरन्तर शान्ति पाने एवं प्रकृति से आधुनिक जीवन के मानसिक तनाव को निकालने के लिए भारत जैसे स्वास्थ्य वर्धक एवं सुन्दर देश की यात्राओं पर आने लगे हैं ।

महत्व (Significance) :

पर्यटक को मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक समन्वय का एक अनुकूल पैकेज प्रदान करने में भारत को प्रकृति से उपलब्धता मिली हुई है, जिसका पूर्ण उपयोग नहीं हो पा रहा है । स्वास्थ्य पर्यटन के द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर इसका विकास होने से एक ऐसी स्वास्थ्य प्रणाली का प्रचार होगा जो बिना किसी दुष्प्रभाव के शरीर को आरोग्यता प्रदान करती है ।

भारत की परम्परागत प्राचीन विधाओं योग, आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा आदि के प्रकाश में आने से लोग स्वास्थ्य के प्रति जागरुक होंगे एवं वे स्वस्थ रहने की प्राकृतिक विधियों को अपनाकर समग्र स्वस्थता की ओर कदम बढ़ा सकेंगे ।

प्रो . नरेन्द्र कुमार उत्तर भारत के स्वास्थ्य पर्यटन पर बोलते हुए कहते हैं कि – wellness is not only a way or life but also a huge industry.

---

23 कदाम्बिनी दिसम्बर 05
24 हिन्दुस्तान नवम्बर 03
25 प्रतियोगिता दर्पण 05

इनका कहना है कि स्वास्थ्य को एक उघोग के रूप में देखना चाहिए, जो धीरे--धीरे एक उघोग का रूप लेगा।[26] इस प्रकार स्वास्थ्य पर्यटन से हमें बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा की प्राप्ति भी हो सकती है । आजकल अन्तर्राष्ट्रीय मार्केट में परम्परागत उत्पाद तेजी से फैल रहे हैं। स्वास्थ्य के कियाकलापों में योग, आयुर्वेद, थैलैसोटीरैपी इत्यादि का महत्व बढ़ने से लोग छुट्टी में बढ़-चढ़कर कर स्वास्थ्य की देखभाल के लिए स्वास्थ्य पर्यटन में हिस्सा ले रहे है।[27] इसलिए भारत जैसे प्राकृतिक समृद्धि प्रदान देश में इसका भविष्य उज्ज्वल है ।

भारत की पर्यटन नीति नियमों के अनुसार भारत आने वाला पर्यटक अपने आप को शारीरिक रूप से स्फूर्ति, मानसिक रूप से तरूण तथा अर्न्तमन से भारत को महसूस करे।[28] इस लक्ष्य को पूरा करने एवं साथ ही अन्य लक्ष्यों को स्वास्थ्य पर्यटन के माध्यम से पूरा किया जा सकता है ।

उत्तराखण्ड को स्वास्थ्य पर्यटन में उभरता हुआ केन्द्र माना जा सकता है । यहॉ पर प्राकृतिक चिकित्सा एवं हर्बल चिकित्सा को तीव्रता से गति प्रदान किया जा रहा है ।[29] उत्तराखडं में स्वास्थ्य पर्यटन की बहुत संभावनाएँ है, इसके लिए हमें यहॉ के प्राकृतिक वातावरण को बनाए रखना होगा इस कारण यहॉ पर स्वास्थ्य पर्यटन का महत्व भी बढ़ जाता है । उत्तराखंड की जलवायु एक स्वस्थ वातावरण का निर्माण करती है एवं स्पष्ट है कि जिस स्थान की जलवायु स्वास्थ्य वर्धक होगी स्वास्थ्य पर्यटन का मूल स्वरूप वही विकसित हो सकता है ।

उत्तराखंड मे स्वास्थ्य वर्धक जलवायु का विकास होने पर भी यहॉ पर हेल्थ टूरिज्म का ठीक तरह से विकास नहीं है, इसलिए यहॉ पर स्वास्थ्य पर्यटन का कोई एक निश्चित स्वरूप नहीं हैं साथ ही यहॉ पर स्वास्थ्य पर्यटन की सही स्थिति व जागरूकता ना होने से घरेलू स्वास्थ्य पर्यटक कम मात्रा में है । इस तरह उत्तराखण्ड में स्वास्थ्य पर्यटन के सुनियोजित नीति निर्धारण की आवश्यकता है जिससे यहॉ पर स्वास्थ्य पर्यटन का विकास किया जा सके ।

26प्रो . नरेन्द्र कुमार – उत्तर भारत में स्वास्थ्य पर्यटन पर विचार रखते हुए ।
27 Second International forem Itely Nov.04
28प्रतियोगिता दर्पण0 5
29 Economic Times Act. 05

शोध अभिकल्प (Research Design) :

समस्या का चयन (Seclection of Problem) :

साहित्यिक सर्वेक्षण, पायलट स्टडी एवं शोध विषय के वर्तमान महत्व के आधार पर शोधार्थी के सामने निम्न तथ्य प्रकट हुए हैं –

- यदि भारत को अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य पर्यटन में सम्मानजनक हिस्सा प्राप्त करना है तो Natural Helth Therapy पर भारतीय परिप्रेक्ष्य में गहन अध्ययन करने के अथक प्रयासों की आवश्यकता है।
- भारत भौगोलिक रूपों में बहुत ही ज्यादा विशाल एवं विविधताओं वाला देश है। इसी कारण इस अध्ययन को एक परिभाषित भौगोलिक एवं सीमित क्षेत्र तक रखना आवश्यक है।
- उत्तराखण्ड आर्थिक रूप से बहुत ज्यादा समृद्ध नहीं है परंतु यहाँ पर प्राकृतिक संसाधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। यदि इन संसाधनों का बुद्धिमत्तापूर्ण दोहन किया जाए तो न केवल यह पर्यटकों का मुख्य केन्द्र होगा बल्कि राज्य को आर्थिक समृद्धि भी देगा।
- शोध द्वारा स्वास्थ्य पर्यटन की निश्चित अवधारणा एवं इसके सामयिक महत्व पर डाला जाएगा ।
- शोध द्वारा स्वास्थ्य पर्यटन से संबंधित विभिन्न तथ्यों के विश्लेषण से स्वास्थ्य पर्यटन संबंधी गतिविधियों का व्यवस्थित स्वरूप प्राप्त होगा।

समस्या का कथन (Statement of Problem) –

उत्तराखण्ड में स्वास्थ्य पर्यटन के स्वरूप का समीक्षात्मक अध्ययन – ऋषिकेश के विशेष संदर्भ में।

उद्देश्य (Objects) –

- स्वास्थ्य पर्यटन के प्राचीन एवं वर्तमान स्वरूप का विश्लेषण करना
- स्वास्थ्य पर्यटन के अंतर्गत वातावरण एवं इसके अन्य घटकों का स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन ।
- स्वास्थ्य पर्यटन के अन्तर्गत उत्तराखंड की भौगौलिक लाभ की दशाएँ एवं यहॉ के अन्य स्वास्थ्य स्थलों का अध्ययन ।

- ऋषिकेश में स्वास्थ्य पर्यटन के प्रभाव को पर्यटको के स्वास्थ्य एवं उनके विचारों के संदर्भ में समीक्षा करना ।
- स्वास्थ्य पर्यटन की सुविधाएँ देने वाले मुख्य केन्द्रों का विभिन्न संदर्भो में अध्ययन करना।
- स्वास्थ्य पर्यटन के नये आयाम के अंतर्गत वैलनेस टूरिज्म का अध्ययन।
- स्वास्थ्य पर्यटन के सुनियोजित प्रबंधन के विकास का अध्ययन।
- स्वास्थ्य पर्यटन के आर्थिक महत्व का विश्लेषण करना ।
- स्वास्थ्य पर्यटन की प्रवृत्तियों का मूल्यांकन
- स्वास्थ्य पर्यटन के मूल स्वरूप को प्रकाश में लाना।

परिकल्पना (Hypothesis) –

- स्वास्थ्य पर्यटन के घटकों का पर्यटक के स्वास्थ्य पर सार्थक प्रभाव पड़ता है ।
- प्राकृतिक वातावरण का उस क्षेत्र विशेष पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
- स्वास्थ्य पर्यटक का स्वास्थ्य के अलावा अन्य क्रियाकलापों में सार्थक प्रभाव नही पड़ता है ।
- स्वास्थ्य पर्यटन से ऋषिकेश की अर्थव्यवस्था पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

शोध प्रणाली (Research Methodology) :

प्रस्तुत शोध अध्ययन को निम्न चरणों में पूर्ण किया जाएगा।

- ऐतिहासिक, भौगोलिक तथा सामाजिक–सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य की जानकारी, साहित्यिक शोधों, लेखों, जर्नलों, प्रोजेक्ट रिर्पोट, समाचार पत्र, वेब साइट इत्यादी के साथ–साथ सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थानों के वार्षिक रिर्पोटस आदि स्त्रोत से शोध सामग्री का संचयन करना।
- पर्यटन की गुणात्मक व मात्रात्मक माँग और स्वास्थ्य पर्यटन के संदर्भ के साथ सेवाओं की आपूर्ति किसी विशेष

प्रकार के डिजाइन किये हुए प्रश्नावली के द्वारा की जायेगी।

- संभाव्यता तथा प्रभावकारी परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए प्रतिचयन विधि, सांख्यिकी विश्लेषण द्वारा व्याख्या तैयार की जायेगी।
- प्रश्नावली को प्रतिउत्तर प्राप्ति के आधार पर स्थानांतरित किया तथा सुधारा जायेगा। साधारणतया अनुक्रियाएँ प्राप्त करने के लिए Close & Open प्रश्नों के साथ Five Point Scale का प्रयोग किया जायेगा।
- तथ्यों का विश्लेषण व विवेचन के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त करना व अपने सुझाव देकर शोध कार्य को पूर्ण करना।

जाएगा।

वैज्ञानिक प्रयोग का आधार –

चर ⇨

स्वतन्त्र चर – स्वास्थ्य पर्यटन एवं इसके घटक

परतन्त्र चर – स्वास्थ्य पर्यटक

स्वास्थ्य पर्यटन एवं इसके घटक – स्वास्थ्य पर्यटन के अन्तर्गत अपने समग्र स्वास्थ्य पर ध्यान देता है वह ऐसी विधि अपनाता है जिससे वह पूर्ण स्वस्थता की ओर बढ़े । स्वास्थ्य पर्यटन में वातावरण अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । साथ ही पर्यटक की जीवन पद्धति एवं स्वास्थ्य थैरेपी यथा– योग, आयुर्वेदिक, प्राकृतिक चिकित्सा का भी पर्यटक पर गहरा प्रभाव पड़ता है ।

IUOTO ने स्वास्थ्य पर्यटन की परिभाषा देते हुए कहा है कि – "Health Tourismis the Provision or health facilities utilçing natural resource or the Country, In particular, Mineral, Water and climate.[30]

स्वास्थ्य पर्यटक – स्वास्थ्य पर्यटक वह पर्यटक है जो स्वास्थ्य की दृष्टि से यात्रा करता है तथा उसका उद्धेश्य हेल्थ केयर तथा मेन्टीनेंस होता है। इस प्रकार पर्यटक अपने समग्र स्वास्थ्य पर

30 Iuoto (1973) Health tourism United Nation Geneva

ध्यान देते हुए उन प्राकृतिक विधियों एवं साधनों पर ध्यान देता है जिससे वह लम्बे समय तक दीर्घायु हो एवं उसकी जीवन शैली उच्चता की ओर बढ़े।

प्रतिदर्श एवं प्रतिचयन योजना –

कुल 300 सामान्य प्रयोज्यों का चयन असंभाव्यता आकस्मिक प्रतिचयन विधि द्वारा उत्तराखंड के ऋषिकेश क्षेत्र में किया जाएगा।

उपकरण –

उत्तराखंड में स्वास्थ्य पर्यटन के स्वरूप का निर्धारण करने के लिए शोधार्थी द्वारा प्रश्नावली स्वयं निर्मित की गई है।

सांख्यकीय विश्लेषण –

शोध से प्राप्त निष्कर्षों को उपयुक्त विधि के द्वारा सांख्यकीय विश्लेषण किया जाएगा।

साहित्यिक सर्वेक्षण (Litrature Review) :

1) **G.A.O. Alleyne** (1990) इन्होंने स्पा एवं इसमें मिलने वाली प्राकृतिक सुविधाओं के बारे में बताया है । इसके अन्तर्गत पर्यटन एवं स्वास्थ्य के सम्बन्ध पर भी प्रकाश डाला गया है। इन्होंने स्पष्ट किया है कि स्पा और हर्बल बाथ का उपयोग लम्बी अवधि से हो रहा है और यही कारण स्वास्थ्य पर्यटन की अवधारणा के मुख्य तत्व है ।

2) **Guru Kanci lal** (2005) इनके अनुसार, भारत में उच्च स्तर की प्राकृतिक चिकित्सा हो रही है । इन्होंने स्वास्थ्य पर्यटन को समझाते हुए इसके अन्तर्गत योग, आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा इत्यादि के बारे में समझाया है एवं इन्हें एक अलग आकर्षण बताया है ।

3) **Lund barg** (1974) इन्होंने यात्रा करने की प्रेरणा के बारे में विस्तार से समझाया है । यात्रा करने की प्रेरणा में इन्होंने शिथलीकरण और प्रसन्नता के साथ–साथ अन्य वर्गीकरण में मौषम और स्वास्थ्य को भी मुख्य बताया है।

4) **H. Robinsion** (1970) इन्होंने स्वास्थ्य को यात्रा की प्रेरणा की मुख्य कारक बताया है । इनके अनुसार यात्रा करने की प्रेरणा स्वास्थ्य से भी काफी प्रेरित होती है । इनके अनुसार यात्रा के कारणों में स्वास्थ्य, प्रसन्नता इत्यादि है जो शरीर और दिमाग को शिथिलीकरण एवं आराम प्रदान करती है।

5) **C. Richard** (1973) के अनुसार जन सामान्य छुट्टियॉ बिताने के लिए परिवर्तित जलवायु में जाकर विभिन्न कियाकलाप करते हैं। यह स्वास्थ्य के महत्व को समझाते हुए कहते है कि लोग छुट्टियॉ बिताते समय स्थानीय विशेषताओं एवं सुविधाओं का आनन्द लेते है, परन्तु वह सबसे ज्यादा महत्व वह अपने आराम एवं स्वास्थ्य को देता है । इस प्रकार इन्होंने यात्रा करने में स्वास्थ्य को प्रमुख आधार बताया है ।

6) **रौबिनेट जैकब** ने अपने रिसर्च **Aurvadaya and Health tourism in Kerala** में स्वास्थ्य र्प्यटन के साथ आयुर्वेदिक चिकित्सीय विधियों का वर्णन भी किया गया है।

7) **H. pategray** (1970) इनके अनुसार प्रसन्नता, घूमने-फिरने एवं प्रकृति के बीच रहने से ही प्राप्त होते हैं । ये दोनों ही कारक स्वास्थ्य पर्यटन के दृष्टिकोण से उपयोगी हैं।

8) **H. robinsin** (1970) इन्होने अपनी पुस्तक में पर्यटन भूगोल के बारे में विस्तार से वर्णन किया है । इसके अन्तर्गत ये स्वास्थ्य और भैागौलिक वातावरण को समझाते है । साथ ही इन्होंने पर्यटन से सम्बन्धित भैागौलिक कारकों का वर्णन किया है ।

9) **A. k. Bhatia** (1999) इन्होंने यात्रा व्यवस्था में प्रसन्नता को यात्रा का कारण बताया है । शांति के लिए यात्रा एवं छुट्टी के लिए भी यात्रा का वर्णन इन्होंने किया है । अपनी पुस्तक में इन्होंने टूर ऑपरेटर को समझाते हुए पैकेजिंग टूर, मार्केटिंग के साथ-साथ पर्यटन के तकनीकी विकास को समझाते हुए मीडिया के अन्तर्गत कम्प्यूटर एवं इन्टरनेट को पर्यटन से अर्न्तसम्बन्ध स्थापित किया है।

10) **Mohinder Chand** (2006) इन्होंने ट्रेवल एजेण्ट एवं टूर ऑपरेटर के परिचय में इनके अर्थ परिभाषा एवं इनके ऑपरेशन बिजनेस को समझाया है । वर्तमान में स्वास्थ्य र्प्यटन के अन्तर्गत भी स्वास्थ्य

पर्यटन के लिए टूर पैकेजिंग किया जाने लगा है । अपनी पुस्तक में इन्होंने टूर पैकेजिंग **मैनेजमेण्ट** एवं ट्रेवल एजेण्ट मैनेजमैण्ट को भी समझाया है ।

11) **R. N. Bhatta** (2001) इन्होंने अपनी पुस्तक में पर्यटन एवं वातावरण के अन्तर्गत पर्यटन के सकारात्मक एवं नकारात्क प्रभाव को वातावरण के सन्दर्भ में बताया है।

12) **A. K. Bhatia** (2002) इन्होंने यात्रा के मनोवैज्ञानिक आयामों का वर्णन किया है इन्होंने पर्यटन को व्यवहार के रूप में एवं यात्रा की प्रेरणा का वर्णन भी किया है । इनके अनुसार शारीरिक प्रेरणा व शारीरिक शिथिलीकरण एवं आराम से सम्बन्धित शारीरिक स्वास्थ्य के लिए यात्रा की जाती है।

13) **Sunil Sharma** (2007) इन्होंने पर्यटन को वैश्विक अर्थव्यवस्था में तीव्र गति से बढ़ने वाला बताया है । अपनी पुस्तक में पर्यटन बाजार के अंतर्गत यह परिवर्तित प्रवृत्तियों के बारे में समझाते हुए इन्टरनेट को ट्रेवल एजेंसी एवं आवासीय उद्योग में मुख्य कारक बताते है । इन्होंने वातावरण के प्रबन्धन को समझाते हुए वातावरण स्थल में दृश्य, जलवायु इत्यादि के महत्व को स्पष्ट किया है ।

14) **दीक्षित एवं राय** (2002) इन्होने स्वास्थ्य पर्यटन का वर्णन किया है स्वास्थ्य पर्यटन में ये योग, आयुर्वेद को मुख्य कारक मानते है। इसक अन्तर्गत इन्होंने आयुर्वेदिक चिकित्सा की विधियों का भी वर्णन किया है ।

15) **डॉ. संजय कुमार शर्मा** (1998) इन्होंने योग को पर्यटन उत्पाद में सम्मिलित किया है । संक्षेप में अष्टांग योग का वर्णन करते हुए यह योग को स्वस्थ रहने की विधा के रूप में स्वीकारते हैं। इनके द्वारा यौगिक अभ्यास के लाभों का वर्णन भी किया गया है।

शोध की सीमाएँ (Limitations of Research)

प्रस्तुत शोध अध्ययन से संबंधित कोई भी शोध कार्य शोधार्थी को उपलब्ध नहीं हुआ है। इससे मिलते-जुलते कार्य एवं इस विषय से संबंधित कई प्रकार की विषय-वस्तु बिखरी हुई मिलती है, इस कारण इस शोध अध्ययन को संपन्न करने में निम्नलिखित सीमाएँ होंगी -

- इस अध्ययन प्रक्रिया में उत्तराखण्ड राज्य के देहरादून जिले के ऋषिकेश नामक स्थान का अध्ययन किया जाएगा।
- स्वास्थ्य पर्यटन के अंतर्गत स्वास्थ्य की प्राकृतिक गतिविधियों का ही अध्ययन किया जाएगा।
- चुने हुए आश्रम, रिसॉर्ट में जाकर स्वास्थ्य पर्यटन संबंधी जानकारी लेना एवं स्वास्थ्य पर्यटकों से मिलकर उनको मिले लाभों के आधार पर अपने शोध को एक नई दिशा देना।
- इस अध्ययन के व्यापक ढांचे के परिप्रेक्ष्य में समय, धन एवं मानव श्रम मुख्य नियंत्रक कारक होंगे।

उपसंहार –

इसके अन्तर्गत उत्तराखंड में स्वास्थ्य पर्यटन के स्वरूप के समीक्षात्मक अध्ययन करने के पश्चात निष्कर्षों को प्रस्तुत किया जाएगा। तथा इसको वैज्ञानिक ढंग से सिद्ध करके प्राप्त परिणामों का विवेचन किया जाएगा।

कार्य योजना (Chapter Scheme) :

1. परिचय (Introduction)
2. शोध अभिकल्प (Research Design)
    - समस्या का चयन (Selection of Problem)
    - समस्या का कथन (Statement of Problem)
    - शोध अध्ययन का उद्देश्य (Objectives of Study)
    - परिकल्पना (Hypothesis)
    - शोध प्रणाली (Research Methodology)
    - साहित्यिक सर्वेक्षण (Litrature Review)
    - अध्ययन की सीमाएँ (Limitation of the Study)
3. अध्ययन स्थल की रूपरेखा (Profile of Study Area)
4. स्वास्थ्य पर्यटन (Health Tourism)
5. स्वास्थ्य पर्यटन का संगठन एवं प्रबंधन (Organisation and Management of Health Tourism)
6. ऋषिकेश – वैलनेस पर्यटन का एक उभरता केन्द्र (Rishikesh- An Emerging Center of Wellness Tourism)
7. विश्लेषन, मूल्यांकन एवं विवेचना (Analysis,Assessment & Interpretation)
8. रणनीति व सुझाव (Strateges and Recommendation)
9. निष्कर्ष (Conclusion)

संदर्भ और साहित्य ग्रंथ सूची

1. Batta, R.N.- Tourism & The environment a quest for sustainability, Indus publication company tagore garden New Delhi .
2. Bhatia, A.K. – Tourism management & Marketing – The usiness of travel agency operation, sterling publisior private ltd green park,New Delhi (1999)
3. Bhatia, A.K. – Tourism development – principal&practicus starline publication, A5, okhelaIndustrial area,Delhi – (2002)
4. Chand, Moninder – Traavel agent management (an introduction text) anmol publication, ansari road,daryagung, Delhi (2006)
5. Chawla, Romila – Tourism services & operations, Arise publication & Distributers, Ansari road,
   Daryagunj. Goel, S.N. – Healthcare policies & Programes, d\deep& Deeppublication, Rajouri garden, New Delhi (2004)
6. Gray, Peter- H - International travel International treand, Health lexing ton book mass (1970)
7. jindal, Dr.Rakesh – Science of nature life, Arogya sewaprakashar, Modinagar (2005)
8. Kamaru, Krishna & Chand, Moninder – Basic of tourism, Kanishka Publication Ansari road, Darya gung, New Delhi (2004)
9. Lundbarg, Donald. E – The tous\rist business, CBI Publishing company, Bostan (1974)
10. Negi Dr.,Jagmohan – Tourism development and resource conservation, B.V. gupta Managing Diractor, Netaji subhash marg Delhi (1990)
11. Robinsion, R – ' Vacations' Psychology today Macdonald and Evans – London (1970)
12. Robinssion, R – Geography or tourism Macdonald and Evans – London (1970)

13. Shafrma, K.K.-Tourism & Culture sarup & sons ansari road Daryagung delhi (1999)
14.Sharma, Sunil – Emerging Internation tourism markets rojat publication, ansari road, Darygung (2007)
15.जैन राजकुमार – योग एवं आयुर्वेद, प्राणवान शोध संस्थान, सालिमार बाग दिल्ली (1997)
16.तीर्थ श्री स्वामी ओंकारानंद – पातंजल योग प्रदीप गीता प्रेस गोरखपुर, (2003)
17.दिक्षीत एवं राय – भारत के प्रमुख पर्यटन एत्पाद,नार्दन आपसेट प्रेस लखनउ (2002)
18.पाठक, कविराज रामदर – काय चिकित्सा, चौखम्भा अकादमी, वाराणसी (1996)
19.रावत, ताज – प्रयर्टन विकास के विविध आयाम, तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली (2002)
20.विद्यालंकार, अत्रिदेव – आयुर्वेद का इतिहास हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग (1978)
21.शास्त्री, रत्नाकर – भारत के प्राणाचार्य आत्माराम एण्ड सन्स नई दिल्ली (1988)
22.शर्मा, संजय कुमार – पर्यटन एवं पर्यटन उत्पाद, तक्षशिला प्रकाशन, अनसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली (1998)
23.सविता मोहन – उत्तरांचल समग्र अध्ययन, विद्यावती प्रकाशन नैनीताल (2002)
24.सरस्वती स्वामी विज्ञानानंद – योग विज्ञान योग निकेतन ट्रष्ट, मुनी की रेती (1998)
25.योग एवं प्राकृति चिकित्सा – ब्रह्मवर्चस (2003)

Magzines -- Confrences

- The spriritual dimension fo health, S.N.Bisht, Government of India, 1985
- The great Portel tourism Journal Vo. -2

- U.N. Confrence on Interantial travel & Tourism
- Business world Dec, 22 -2003
- Iuoto, Health tourism united nation Geneva, 1973
- Hospitality sales and marketing Association Intefrnational Marketing Review, spring 2001 Vol- 18
- Secon international forum- leisure futures Itly, nov -04

पत्रिकाएँ --

- आयुर्वेद विकास -- 03
- कानिकल -- 04
- कादम्बिनी--05
- प्रतियोगिता दर्पण -- 05
- अहाजिन्दगी --05

न्यूज पेपर --

- दैनिक भास्कर
- अमर उजाला
- हिन्दुस्तान
- Economic times
- The Hindu
- The times of India

Web sites --

- www.webIndia123.com/yoga/yoga.htm
- www.indialine.com/travel/uttaranchal/ayurveda-spa.html
- www.medizen.in
- www.yogatourism.com
- www.euromonitor.com/Travel-and-Tourism-in-india